



रुद्राष्टकम्-नमामीश मीशान निर्वाणरूपं

<https://www.chalisa.online>

॥ रुद्राष्टकम् ॥

नमामीश मीशान निर्वाणरूपं विभुं व्यापकं ब्रह्मवेद स्वरूपं ।
निजं निर्गुणं निर्विकल्पं निरीहं चदाकाश माकाशवासं भजेहं ॥
निराकार मौकार मूलं तुरीयं गिरिज्ञान गोतीत मीशं गिरीशं ।
करालं महाकालकालं कृपालं गुणागार संसारसारं नतो हं ॥
तुषाराद्रि संकाश गौरं गंभीरं मनोभूतकोटि प्रभा श्रीशरीरं ।
स्फुरन्मौलिकल्लोलिनी चारुगांगं लस्त्फालबालेंदु भूषं महेशं ॥
चलकुंडलं भ्रू सुनेत्रं विशालं प्रसन्नाननं नीलकंठं दयालुं ।
मृगाधीश चर्मांबरं मुंडमालं प्रियं शंकरं सर्वनाथं भजामि ॥
प्रचंडं प्रकृष्टं प्रगल्भं परेशं अखंडं अजं भानुकोटि प्रकाशं ।
त्रयी शूल निर्मूलनं शूलपाणिं भजेहं भवानीपतिं भावगम्यं ॥
कलातीत कल्याण कल्पांतरी सदा सज्जनानंददाता पुरारी ।
चिदानंद संदोह मोहापकारी प्रसीद प्रसीद प्रभो मन्मधारी ॥
न यावद् उमानाथ पादारविंदं भजंतीह लोके परे वा नाराणां ।
न तावत्सुखं शांति संतापनाशं प्रसीद प्रभो सर्वभूताधिवास ॥
नजानामि योगं जपं नैव पूजां नतो हं सदा सर्वदा देव तुभ्यं ।
जराजन्म दुःखौघतातप्यमानं प्रभोपाहि अपन्नमीश प्रसीद! ॥

॥ <https://www.chalisa.online> ॥